Amire Ahle Sunnat Ke 126 Irshadat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 280
Weekly Booklet : 280

अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के
मुख़्तलिफ़ फ़रामीन का मज्मूआ़

क़िस्त 2

अमीरे अहले सुन्नत के 126 इर्शादात

सफ़्हात 19

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत के 126 इर्शादात**

सिने त़बाअ़त : जुमादिल आख़िर **1444** हि., दिसम्बर **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत के 126 इर्शादात**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत के 126 इर्शादात(1)

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला : "**अमीरे अहले सुन्नत के 126 इर्शादात**" पढ़ या सुन ले उसे दीन की ख़िदमत का जज़्बा अ़ता फ़रमा और राहे सुन्नत पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब किसी मस्जिद के पास से गुज़रो तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो । (فضل الصلاۃ علی النبی للقاضی الجھضمی، ص70، رقم:80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दौरे ह़ाज़िर की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उन हस्तियों में से एक हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक ने बे पनाह इ़ल्मो ह़िक्मत से नवाज़ा है । आप के मल्फ़ूज़ातो इर्शादात सुन कर लोग अख़्लाक़ो किरदार का पैकर बनते और दीनो दुन्या की ढेरों बरकतें समेटते हैं, आइये ! हम भी इन इर्शादात की रोशनी में अपने ज़ाहिरो बात़िन को संवारने की कोशिश करते हैं ।

1... अक्सर इर्शादात माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के सिलसिले "अ़त्त़ार का चमन कितना प्यारा चमन" से लिये गए हैं ।

इर्शादाते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

﴾1﴿ जन्नत में ले जाने वाले कामों में से एक काम "मुसल्मान को अपने शर से बचाना है।" (मदनी मुज़ाकरा, 3 रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.)

﴾2﴿ बन्दे की सब से बड़ी ख़ूबी ईमानदार (या'नी मुसल्मान) होना है।

(24 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1443 ब मुत़ाबिक़ 23 जूलाई 2022)

﴾3﴿ रियाकारी से बचते हुए इख़्लास के साथ नेक आ'माल करने की आ़दत बनाइये कि मुख़्लिस शख़्स हज़ार(1000) पर्दों में छुप कर भी नेक काम करे, **अल्लाह** पाक उसे लोगों में मश्हूर फ़रमा देता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 25 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि.)

﴾4﴿ दीनी ता'लीम ह़ासिल करने वाले का मुस्तक़्बिल (या'नी क़ब्रो आख़िरत) रोशन व ताबनाक है। (मदनी मुज़ाकरा, 10 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾5﴿ मुस्कुराना सुन्नत है, मुस्कुराने वालों के लोग क़रीब आते हैं, हर वक़्त रोनी सूरत बनाए रखने वालों से लोग दूर भागते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 25 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

﴾6﴿ आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ बोलने में कहीं रियाकारी न हो जाए लिहाज़ा जब तक दिली कैफ़िय्यत न हो तो ज़बान से अपने आप को "ह़क़ीर, फ़क़ीर" नहीं कहना चाहिये। (मदनी मुज़ाकरा, 24 रबीउ़ल आख़िर 1439 हि.)

﴾7﴿ सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी व बा अ़मल आ़लिमे दीन की सोह़बत में रहने वाले शख़्स को इ़ल्म व रूह़ानिय्यत दोनों ह़ासिल होते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि.)

﴾8﴿ येह आ़शिक़ाने रसूल का हि़स्सा है कि जब मदीने जाते हैं तो रोते हैं कि हम ह़ाज़िरी के क़ाबिल नहीं और जब मदीने से वापस होते हैं तो भी रोते हैं कि मदीना छूट रहा है।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हि.)

﴾9﴿ याद रखिये ! दुन्या न किसी के काम आई है, न आएगी और न ही क़ब्र में साथ जाएगी। (मदनी मुज़ाकरा, यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾10﴿ नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम, अहले बैते अत़्हार और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की ग़ुलामी में दर अस्ल आज़ादी है। (मदनी मुज़ाकरा, 13 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि.)

﴾11﴿ ख़ुशी के मौक़ए़ जैसे शादी या सालगिरह वग़ैरा पर तोह़फ़े में शोपीस या कोई और चीज़ देने के बजाए नक़्द पैसे देना ज़ियादा मुफ़ीद है कि इस से वोह अपनी ज़रूरिय्यात पूरी कर सकते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.)

﴾12﴿ हर वोह बात जिस से गुनाहों का दरवाज़ा खुले उस से इज्तिनाब करना (या'नी बचना) ज़रूरी है। (मदनी मुज़ाकरा, 8 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾13﴿ क़बूलिय्यत का दारो मदार कस्रतो क़िल्लत पर नहीं, बल्कि इख़्लास पर है। (मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.)

﴾14﴿ मसाजिद के इमाम साह़िबान व मुअज़्ज़िनीन सफ़ेद पोश होते हैं और इन की तनख़्वाहें उ़मूमन कम होती हैं लिहाज़ा हर एक को अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ इन की माली ख़िदमत करनी चाहिये, इस से اِنْ شَآءَاللّٰه इन का दिल ख़ुश होगा। (इन्हें मुसल्ले, मिठाई के डिब्बे और इ़त्र

वग़ैरा के ख़ूब सूरत पेकेट देने के बजाए "रक़म" पेश करनी चाहिये ताकि वोह ज़रूरतन दवा, राशन और लिबास वग़ैरा की तरकीब फ़रमा सकें।)

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.)

﴾15﴿ नक़्शे ना'लैन शरीफ़ के बेज (Badge) इमामे या कपड़ों पर लगाने का मक़्सद ज़ीनत ह़ासिल करना नहीं बल्कि बरकत ह़ासिल करना है।

(मदनी मुज़ाकरा, 11 रबीउ़ल अव्वल 1439 हि.)

﴾16﴿ अब्रू या'नी भंवों पर तेल लगाना सुन्नत है और इस से सर दर्द भी दूर होता है। (मदनी मुज़ाकरा, 25 जुमादल उख़्रा 1438 हि.)

﴾17﴿ हमें दुन्यावी भलाइयां ह़ासिल करने के लिये भी वोही काम करना चाहिये जो ऐन शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾18﴿ मेरी माली ख़िदमत करने का जज़्बा रखने वाले, मेरे बदले अपने अ़लाक़े के सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिमे दीन की ख़िदमत करें।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾19﴿ मुसीबत पर सब्र करने की एक सूरत येह है कि किसी से उस मुसीबत का बिला मस्लह़त इज़्हार न किया जाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि.)

﴾20﴿ जब भी बोलें अच्छा बोलें कि मीठे बोल में ऐसा सेह्र (या'नी जादू) है कि सरकश (या'नी ना फ़रमान व बाग़ी) मुत़ीअ़ (या'नी इत़ाअ़त गुज़ार) हो जाते हैं। (मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि.)

﴾21﴿ दूध **अल्लाह** पाक की ऐसी ने'मत है कि जिस में पानी और ग़िज़ा

दोनों हैं, अलबत्ता सब से अच्छा दूध बकरी का है और येह जल्द हज़्म (Digest) भी हो जाता है। (मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि.)

﴾22﴿ थकन का एक इ़लाज येह भी है कि नीमगर्म पानी से ग़ुस्ल कर लिया जाए और सोने से पहले तस्बीहे़ फ़ातिमा (या'नी 33 बार سُبْحٰنَ اللّٰه, 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰه और 34 बार اَللّٰهُ اَكْبَر) का विर्द किया जाए।

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम जुमादल ऊला 1436 हि.)

﴾23﴿ मां बाप की क़द्र कीजिये कि इन का ने'मल बदल (Alternate) कोई नहीं है। (मदनी मुज़ाकरा, 7 जुमालद ऊला 1436 हि.)

﴾24﴿ मां बाप को चाहिये कि वोह बच्चों को प्यार व महब्बत और हि़क्मते अ़मली से समझाएं, बात बात पर झाड़ना, मारना और चीख़ चीख़ कर समझाना बच्चों को बाग़ी (ना फ़रमान) बना सकता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 13 रजबुल मुरज्जब 1436 हि.)

﴾25﴿ सलीक़ा मन्द औलाद अपने वालिदैन के सामने बुलन्द आवाज़ से बात नहीं करती बल्कि उन का अदब करती और उन के हाथ पाउं चूमती है। (मदनी मुज़ाकरा, 6 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

﴾26﴿ जो बात दो होंटों में नहीं समाई वोह कहीं नहीं समाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रमज़ानुल मुबारक 1432 हि.)

﴾27﴿ जिस के बारे में येह हुस्ने ज़न हो कि इस की दुआ क़बूल होती है तो उस से बे हि़साब मग़्फ़िरत की दुआ करवानी चाहिये।

(मदनी मुज़ाकरा, 25 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

﴾28﴿ हुस्ने ज़न में कोई शर (या'नी बुराई) नहीं और बद गुमानी में कोई ख़ैर (या'नी भलाई) नहीं। (मदनी मुज़ाकरा, 18 रमज़ानुल मुबारक 1432 हि.)

﴾29﴿ रोज़ाना (Daily) 12 गिलास, या'नी कमो बेश 3 लीटर पानी पियें اِنْ شَآءَاللّٰه गुर्दों के अमराज़ से महफ़ूज़ रहेंगे और क़ब्ज़ से भी बचेंगे।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 मुहर्रमुल हराम 1436 हि.)

﴾30﴿ अगर मुसल्मान ज़ाहिरी नुमूदो नुमाइश के अख़्राजात ख़त्म कर के ए'तिदाल से ज़िन्दगी गुज़ारें तो ख़ुशहाली आ जाएगी, اِنْ شَآءَاللّٰه।

(मदनी मुज़ाकरा, 25 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

﴾31﴿ वक़्त एक ने'मत है और ने'मत की क़द्र उस के ज़वाल (या'नी ख़त्म होने) के बा'द होती है लिहाज़ा इस वक़्त को क़ीमती बनाते हुए नेकियों में गुज़ारिये। (मदनी मुज़ाकरा, 4 रजबुल मुरज्जब 1440 हि.)

﴾32﴿ मुआशरे (Society) का सब से मुअ़ज़्ज़ज़ (Respectable) और अ़क़्ल मन्द त़बक़ा उ़लमाए किराम का है। उ़लमाए किराम पर तन्क़ीद नहीं बल्कि इन का अदबो एह़तिराम कीजिये।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मुहर्रमुल हराम 1441 हि.)

﴾33﴿ (अफ़्सोस !) आज मुसल्मान सोशल मीडिया और प्रिन्ट मीडिया के ज़रीए एक दूसरे को रुस्वा कर रहे हैं जब कि इस्लाम ने मुसल्मानों को एक दूसरे की इ़ज़्ज़त का मुहाफ़िज़ बनाया है।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 मुहर्रमुल हराम 1441 हि.)

﴾34﴿ जिस के पास माल ज़ियादा होता है लोग उसे मालदार (Rich) समझते हैं मगर ह़क़ीक़त में मालदार वोह क़नाअ़त पसन्द शख़्स है कि जितना **अल्लाह** पाक ने उसे दिया वोह उस पर राज़ी रहे।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 रबीउ़ल आख़िर 1440 हि.)

﴾35﴿ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर फ़ैज़ ह़ासिल करने के लिये जाना

चाहिये और (दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये) उन के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिये। (मदनी मुज़ाकरा, 3 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾36﴿ दस बीबियों की कहानी, जनाबे सय्यिदह की कहानी वग़ैरा मन घड़त कहानियों का पढ़ना और इन की मन्नत मानना जाइज़ नहीं। अगर किसी ने इन के पढ़ने की मन्नत मानी है तो उस मन्नत का पूरा करना भी जाइज़ नहीं है। (मदनी मुज़ाकरा, 5 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾37﴿ किसी को अपना राज़ बताना गोया उस का ग़ुलाम बनना है।

(9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1441 हि., 30 जूलाई 2020 ई.)

﴾38﴿ बा'ज़ लोग येह समझते हैं कि खजूर, पानी या नमक से रोज़ा इफ़्तार करना ज़रूरी है, ऐसा नहीं है बल्कि किसी भी खाने या पीने की चीज़ से रोज़ा इफ़्तार कर सकते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 18 रमज़ानुल मुबारक 1437 हि.)

﴾39﴿ जहां ज़रूरत हो वहां बेशक अ़लल ए'लान इस्लाह़ की जाए मगर आज कल बा'ज़ नादान लोग इस्लाह़ के नाम पर सोशल मीडिया के ज़रीए़ मुसल्मान के ऐ़ब लाखों लोगों तक पहुंचा देते हैं जिस से उस मुसल्मान की इ़ज़्ज़त मह़फ़ूज़ नहीं रहती।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾40﴿ अगर आप बारगाहे रिसालत में मुक़र्रब होना चाहते हैं तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त, सुन्नतों पर ख़ूब अ़मल और दुरूद शरीफ़ की कसरत कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब मिल जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾41﴿ दीने इस्लाम फ़ितना व फ़साद की हौसला शिकनी और प्यार, अम्न और भाईचारे की हौसला अफ़्ज़ाई करता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 मुहर्रमुल हराम 1441 हि.)

﴾42﴿ बच्चों में येह फ़ित्री (या'नी क़ुदरती, Natural) बात होती है कि वोह बड़ों की नक़्क़ाली (या'नी उन्हें Copy) करते हैं, अगर घर में नमाज़ों का माहोल होगा तो बच्चे भी नमाज़ों की नक़्क़ाली करेंगे और अगर (مَعَاذَاللّٰه) गाने बाजे या डान्स का माहोल होगा तो बच्चे भी डान्स करेंगे।

(मदनी मुज़ाकरा, 19 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441 हि.)

﴾43﴿ नेक आ'माल पर इस्तिक़ामत पाने के लिये इब्तिदाअन नफ़्स को जब्रन नेकियों की त़रफ़ गामज़न करना पड़ता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 29 जुमादल उख़्रा 1436 हि.)

﴾44﴿ जो मुल्की क़वानीन (National Rules) शरीअ़त से न टकराते हों उन पर अ़मल करना चाहिये। (मदनी मुज़ाकरा, 25 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

﴾45﴿ घर में (ख़ुदा न ख़्वास्ता) गुनाहों भरे चेनल चलाएंगे तो बच्चे भी गाने गुनगुनाएंगे और फ़िल्मी डायलॉग बोलेंगे जब कि दा'वते इस्लामी का चेनल चलाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه इस की बरकत से बच्चों के ईमान की हिफ़ाज़त, किरदार में निखार और ज़बान पर ज़िक्रो दुरूद रहेगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 19 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1441 हि.)

﴾46﴿ गुनाह करना तो दूर की बात है गुनाह के क़रीब भी नहीं जाना चाहिये। (मदनी मुज़ाकरा, 8 शव्वालुल मुकर्रम 1441 हि./30 मई 2020 ई.)

﴾47﴿ Quantity नहीं Quality पर नज़र रखिये। (ता'दाद नहीं मे'यार पर नज़र रखिये।)

﴾48﴿ ख़ामोशी, तक़्वा और नेकी अपना लीजिये और मुनाज़िराना अन्दाज़ की बजाए मुबल्लिग़ बन जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه क़ौम आप के पीछे आ जाएगी। (5 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾49﴿ अपनी शोहरत की वज्ह से बारहा मैं **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर से डरता हूं। (6 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾50﴿ सन्जीदगी (अपनाएं मगर) ऐसी भी न हो कि मुस्कुराने के मौक़अ़ पर भी मुंह बना रहे। (8 मुहर्रमुल ह़राम 1441 हि.)

﴾51﴿ मुस्कुराहट बहुत से मसाइल ह़ल कर देती है।

(16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 हि., 3 अक्तूबर 2020 ई.)

﴾52﴿ (उख़्वी ए'तिबार से) हमेशा "मज़्लूम" की जीत होती है।

(7 मुहर्रमुल ह़राम 1444 ब मुत़ाबिक़ 5 अगस्त 2022 ई.)

﴾53﴿ तज्वीद व क़िराअत के साथ क़ुरआने करीम पढ़ने वाला "क़ाबिले रश्क" है। (2 मुहर्रमुल ह़राम 1444 ब मुत़ाबिक़ 2 अगस्त 2022 ई.)

﴾54﴿ बच्चों को चॉक्लेट, टॉफ़ियां, चिप्स वग़ैरा खिलाने की बजाए दूध, फल और सब्ज़ियां वग़ैरा खिलाइये, اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم बच्चों की सिह़्ह़त अच्छी रहेगी। (2 मुहर्रमुल ह़राम 1444 ब मुत़ाबिक़ 2 अगस्त 2022 ई.)

﴾55﴿ मुसल्मान का अन्दाज़ कहीं भी बद अख़्लाक़ी वाला नहीं होना चाहिये। (6 मुहर्रमुल ह़राम 1444 ब मुत़ाबिक़ 4 अगस्त 2022 ई.)

﴾56﴿ اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मैं वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुरीदीन व त़ालिबीन के लिये दुआ़एं करता रहता हूं। (9 मुहर्रमुल ह़राम 1444 ब मुत़ाबिक़ 8 अगस्त 2022 ई.)

﴾57﴿ "सुख के साथी" बहुत मगर "दुख का साथी" कोई कोई होता है।

(9 मुहर्रमुल ह़राम 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 8 अगस्त 2022 ई.)

﴾58﴿ मुह़र्रमुल ह़राम में अहले बैते अत़्हार (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के मुस्तनद फ़ज़ाइल बयान करने चाहिएं ताकि लोगों के दिलों में इन मुक़द्दस हस्तियों की अ़ज़्मत बैठे। (मुबल्लिग़ीन के लिये)

(9 मुह़र्रमुल ह़राम 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 8 अगस्त 2022 ई.)

﴾59﴿ ''अस्ल इ़ज़्ज़त'' आख़िरत की है, दुन्या की इ़ज़्ज़त का कोई मे'यार नहीं। (3 रबीउ़ल आख़िर 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 30 अक्तूबर 2022 ई.)

﴾60﴿ काम सिर्फ़ ''चाहने'' से नहीं ''करने'' से होता है कि ''ह़रकत में बरकत'' है। (4 रबीउ़ल आख़िर 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 30 अक्तूबर 2022 ई.)

﴾61﴿ ग़फ़्लत से बचने के लिये ग़ाफ़िलों की सोह़बत से बचना होगा।

(29 मुह़र्रमुल ह़राम 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 27 अगस्त 2022 ई.)

﴾62﴿ दिल ''तलवार'' से नहीं ''ह़ुस्ने अख़्लाक़'' से जीते जा सकते हैं।

(पहली सफ़र 144 हि. ब मुत़ाबिक़ 29 अगस्त 2022 ई.)

﴾63﴿ दुखों पर ''मिर्चें'' रखने के बजाए ''मरहम'' रखिये।

(पहली सफ़र 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 29 अगस्त 2022 ई.)

﴾64﴿ जो हमें समझाए वोह हमारा ''मोह़्सिन'' है।

(19 रबीउ़ल अव्वल 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 15 अक्तूबर 2022 ई.)

﴾65﴿ जिसे (अ़मल का) जज़्बा मिल जाए वोह दुन्या के किसी भी कोने में चला जाए सुन्नतें नहीं छोड़ता।

(पहली ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 1 जूलाई 2022)

﴾66﴿ किसी का ''महल'' देख कर अपनी ''झोपड़ी'' जलाने के बजाए फ़ुटपाथ पर पड़े बे घर को देखिये।

(3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 31 अगस्त 2022 ब तग़य्युर)

﴾67﴿ ''एह़सास'' मह़ब्बत की असास (या'नी बुन्याद) है।

(3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 31 अगस्त 2022 ई.)

﴾68﴿ टूटे दिल जोड़ने चाहिएं न कि जुड़े दिलों को तोड़ा जाए।

(9 रबीउ़ल आख़िर 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 4 नवम्बर 2022 ई.)

﴾69﴿ मरीज़ की इ़यादत को जाइये कि सुन्नत है, मगर इतना ज़ियादा न रुकिये कि मरीज़ परेशान हो जाए।

(11 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 13 एप्रिल 2022 ई.)

﴾70﴿ ''मुसल्मान को हर तक्लीफ़ पर अज्र मिलता है। सब्र जन्नत का ख़ज़ाना है।'' (18 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 20 एप्रिल 2022 ई.)

﴾71﴿ یَامُهَیْمِنُ 29 बार रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَ اللّٰه الْکَرِیْم हर आफ़तो बला से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(20 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 22 एप्रिल 2022 ई.)

﴾72﴿ ''एक मक़्बूल नेकी दुन्या की सारी दौलत और बादशाहत से बेहतर है।'' (23 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 25 एप्रिल 2022 ई.)

﴾73﴿ یَااللّٰه 100 बार सोते वक़्त पढ़ने से اِنْ شَآءَ اللّٰه الْکَرِیْم शरीर जिन्नात की शरारत और फ़ालिज व लक़्वे की आफ़त से ह़िफ़ाज़त होगी।

(26 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 28 एप्रिल 2022 ई.)

﴾74﴿ माहे रमज़ान के आने पर ख़ुश और जाने पर ग़मज़दा होना ख़ुश नसीबों का ह़िस्सा है।

(28 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुत़ाबिक़ 30 एप्रिल 2022 ई.)

﴾75﴿ ईद सिर्फ़ रंग बरंगे कपड़े पहनने, सैरो तफ़रीह़ करने और अच्छे अच्छे खाने खाने का नाम नहीं, ईद तो **अल्लाह** करीम का शुक्र अदा

करने, ख़ैर ख़ैरात करने और रिज़ाए इलाही के काम करने का दिन है।

(29 रमज़ानुल मुबारक 1443 हि. ब मुताबिक़ 1 मई 2022 ई.)

﴾76﴿ जिसे कोई समझाने वाला नहीं वोह बड़ा "बद नसीब" है।

(19 रबीउ़ल अव्वल 1444 हि. ब मुताबिक़ 15 अक्तूबर 2022 ई.)

﴾77﴿ गुनाह करना नहीं चाहिये और (गुनाहों पर) रोना तर्क करना (या'नी छोड़ना) भी नहीं चाहिये। (3 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि.)

﴾78﴿ तन्क़ीद बरदाश्त करने वाला "बड़ा आदमी" है।

(9 रबीउ़ल आख़िर 1444 हि. ब मुताबिक़ 4 नवम्बर 2022 ई.)

﴾79﴿ त़लबा मुल्क का अहम "सरमाया" होते हैं और येह मुल्क की "तक़्दीर" बदल सकते हैं। (10 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾80﴿ (नेक अ़मल की) क़बूलिय्यत का दारो मदार क़िल्लत व कसरत (या'नी कमी और ज़ियादती) पर नहीं "इख़्लास" पर है।

(10 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि.)

﴾81﴿ कभी भी बड़ा बोल नहीं बोलना चाहिये।

(13 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. बा'दे अ़स्र)

﴾82﴿ इ़ज़्ज़त दो, इ़ज़्ज़त लो। (15 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾83﴿ बच्चों, बूढ़ों और मरीज़ों को प्यार दीजिये।

(15 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾84﴿ हमारा किरदार ऐसा होना चाहिये जिसे देख कर लोग कहें : इस को "Follow" करना चाहिये। (16 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾85﴿ "सन्जीदगी" आ़लिम का ज़ेवर है। (15 रबीउ़ल अव्वल 1444 हि.)

﴾86﴿ रूह़ की ग़िज़ा ''**अल्लाह** पाक का ज़िक्र'' है।

(16 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. बा'दे अ़स्र)

﴾87﴿ **अल्लाह** पाक को नाराज़ करने वाले काम कर के भला ख़ुशी मनाई जा सकती है ? (यक़ीनन नहीं) (19 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾88﴿ ''मश्वरा'' उस से लें जो ख़ौफ़े ख़ुदा वाला और अमीन (या'नी अमानत दार) हो। (16 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾89﴿ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत की वज्ह से मैं सादाते किराम से मह़ब्बत करता हूं। (20 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾90﴿ ''जन्नत'' सादाते किराम के क़दमों के सदक़े से मिलेगी।

(20 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾91﴿ अस्ल शादी (या'नी ख़ुशी का मौक़अ़) ''मदीने की ह़ाज़िरी'' है।

(21 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾92﴿ रमज़ानुल करीम में नोट कमाने की बजाए ''नेकियां कमाने'' पर तवज्जोह देनी चाहिये। (22 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾93﴿ जब मुझे पता चलता है कि फ़ुलां दा'वते इस्लामी का दीनी काम करता है तो मेरा दिल ख़ुश होता है।

(7 रबीउ़ल आख़िर 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 3 नवम्बर 2022 ई. ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरा)

﴾94﴿ सब से बड़ा ''मुतअस्सिर कुन'' शख़्स वोही है जो गुनाहों से बचता हो और उस का हर क़दम ''सुन्नतों'' के रास्ते पर पड़ता हो।

(25 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾95﴿ तस्ख़ीरे क़ुलूब (या'नी दिलों को क़ाबू करने) का बड़ा वज़ीफ़ा चेहरे पर ''मुस्कुराहट'' रखना है, मगर सुन्नत की निय्यत से मुस्कुराइये और

नेकी की दा'वत (देने) की ख़ातिर लोगों को क़रीब कीजिये।

(25 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾96﴿ किसी की "जान" बचाना अगर्चे अच्छा काम है मगर किसी का "ईमान" बचाना इस से ज़ियादा "अहम" है।

(26 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾97﴿ अच्छी सोहबत नायाब नहीं तो कमयाब ज़रूर है।

(28 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾98﴿ ईदुल फ़ित्र रोज़ाख़ोरों (या'नी रोज़ा न रखने वालों) की नहीं बल्कि रोज़ादारों की होती है। (29 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

﴾99﴿ मेरे नज़्दीक मेरे लिये वोह "दिन" अफ़्ज़ल है जिस में कोई गुनाह न हो। (29 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. अस्र)

﴾100﴿ किसी को उसूल का पाबन्द बनाने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि ख़ुद उसूल के पाबन्द बन जाएं।

(18 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1443 हि., 26 सितम्बर 2021 ई.)

﴾101﴿ अपनी शख़्सिय्यत को निखारने की बजाए अपने नामए आ'माल को निखारने की फ़िक्र कीजिये।

(18 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1443 हि., 26 सितम्बर 2021 ई.)

﴾102﴿ सब से आ'ला कुरसी "ग़ुलामिये मुस्त़फ़ा" की कुरसी है।

(11 रबीउ़ल अव्वल 1443 हि.)

﴾103﴿ "काम" करने से होता है, फ़क़त़ चाहने या कुढ़ने से नहीं।

(7 जुमादल ऊला 1443 हि., 12 दिसम्बर 2021 ई.)

﴾104﴿ दुन्यावी ख़ुशी आ़रिज़ी (Temporary) है और इस में भी कई ग़म छुपे हुए हैं। (28 रबीउ़ल आख़िर 1443 हि., 5 दिसम्बर 2021 ई.)

﴾105﴿ दौराने बयान अच्छे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना और वाह वा चाहना एक ऐसी दीमक है जो बयान के अज्रो सवाब को चाटती रहती है। (19 मुह़र्रमुल ह़राम 1441 हि., 19 सितम्बर 2019)

﴾106﴿ मुसल्मानों को सस्ता माल बेच कर रमज़ानुल मुबारक में नेकियां कमाइये कि रमज़ानुल मुबारक माल नहीं बल्कि नेकियां कमाने का महीना है। (1 रमज़ान 1443 हि., 2 एप्रिल 2022 ई.)

﴾107﴿ शर्ई मस्लह़तों के बिग़ैर ख़त़रों से खेलने वाले बहादुर नहीं, अह़मक़ (या'नी बे वुक़ूफ़) होते हैं। (1 रमज़ान 1443 हि., 2 एप्रिल 2022 ई.)

﴾108﴿ अच्छा दोस्त वोह है जिस को देख कर ख़ुदा याद आए। (1 रमज़ान 1443 हि., 2 एप्रिल 2022 ई.)

﴾109﴿ मरज़ हो या क़र्ज़, बस अपने मूड में ह़रज (या'नी सख़्ती) नहीं आना चाहिये। (या'नी मिज़ाज बद अख़्लाक़ नहीं होना चाहिये।) (5 शव्वालुल मुकर्रम 1443 हि., ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरा)

﴾110﴿ पहले जान हथेली पर रखनी पड़ती है, फिर जान क़ुरबान करने वाले बनते हैं। (5 शव्वालुल मुकर्रम 1443 हि., ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरा)

﴾111﴿ साह़िबे माल बनने की बजाए साह़िबे नेक आ'माल बनने की कोशिश कीजिये। (6 शव्वालुल मुकर्रम 1443 हि., ख़ुसूसी मदनी मुज़ाकरा)

﴾112﴿ हम **अल्लाह** पाक के आ़जिज़ बन्दे हैं, हमें आ़जिज़ी ही करनी है,

दादागीरी (या'नी बद मआ़शी) नहीं ।

(19 ज़िल क़ा'दह 1443 हि., 19 जून 2022 ई.)

﴾113﴿ जो शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग कहे हमें उस से अलग रहना है । (19 ज़िल क़ा'दह 1443 हि., 19 जून 2022 ई.)

﴾114﴿ गुलामिये मुस्त़फ़ा में मिलने वाली हुकूमत जिस्मों पर नहीं बल्कि दिलों पर होती है । (19 ज़िल क़ा'दह 1443 हि., 19 जून 2022 ई.)

﴾115﴿ हफ़्तावार इज्तिमाअ़ की पाबन्दी करें, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم बा जमाअ़त नमाज़ के भी पाबन्द हो जाएंगे । (24 ज़िल क़ा'दह 1443 हि., 24 जून 2022 ई.)

﴾116﴿ गुलामिये रसूल की कुरसी मिल जाए तो फिर किसी कुरसी (या'नी दुन्यावी ओ़हदे या मन्सब) की ज़रूरत नहीं ।

(27 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1443 हि., 27 जून 2022 ई.)

﴾117﴿ "72 नेक आ'माल" **अल्लाह** पाक की याद का ज़रीआ़ हैं और **अल्लाह** पाक की याद में ही सुकून है ।

(27 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1443 हि., 27 जून 2022 ई.)

﴾118﴿ सरमायए इ़श्क़ पाने के लिये इ़श्क़े इलाही और इ़श्क़े रसूल पर मब्नी ह़िकायात व मज़ामीन पढ़ने चाहिएं ।

(मदनी मुज़ाकरा, 4 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि.)

﴾119﴿ जिसे दीन के मुआ़मले में सताया जाए उसे चाहिये कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद कर लिया करे ।

(28 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1443 हि., 28 जून 2022 ई.)

﴾120﴿ **मुन्जियात** व **मोहलिकात** (**मुन्जियात** या'नी नजात दिलाने वाले आ'माल, **मोहलिकात** या'नी हलाकत में डालने वाले आ'माल) का इल्म सीखेंगे तो शैत़ान का भरपूर मुक़ाबला हो सकेगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि.)

﴾121﴿ ज़हीन पर अपनी ज़हानत का शुक्र अदा करना ज़रूरी है क्यूं कि ज़हानत क़ुदरती अ़त़िय्या (या'नी **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से तोह़फ़ा) है।

(28 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1443 हि., 28 जून 2022 ई.)

﴾122﴿ जज़्बा हो तो राहें हज़ार, जज़्बा न हो तो बहाने हज़ार।

(27 ज़िल क़ा'दतिल ह़राम 1443 हि., 27 जून 2022 ई.)

﴾123﴿ अगर इस्तित़ाअ़त हो तो शह्र का सब से बेहतरीन जानवर ख़रीद कर क़ुरबानी करने के लिये बारगाहे रिसालत में पेश करें और अ़र्ज़ करें :

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

(3 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1443 हि., 2 जून 2022 ई.)

﴾124﴿ उस्ताद की क़ाबिलिय्यत इस में है कि वोह कुन्द ज़ेह्न त़ालिबे इल्म को पढ़ा कर इम्तिह़ान में काम्याब कर दे।

(3 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1443 हि. 2 जून 2022 ई.)

﴾125﴿ "बोलना" आसान है मगर "कर के" दिखाना मुश्किल है।

(2 मुह़र्रमुल ह़राम 1444 हि. ब मुत़ाबिक़ 2 अगस्त 2022 ई.)

﴾126﴿ जब ओ़हदा व मन्सब मिलता है तो बन्दा बसा अवक़ात ज़ुल्म में मुब्तला हो जाता है।

अगले हफ़्ते का रिसाला